

आज की
आंख का
सिलसिला

कविता प्रकाशन, बीकानेर

हरीश मादानी



आज की
आंख का
झिलझिला

प्रकाशक कविता प्रकाशन, तेलीवाडा, बीकानेर ३३४००१ / मूल्य तीस रुपये/
संस्करण प्रथम १९८५/मुद्रक गणेश कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा लुधियाना प्रिंटर्स,
दिल्ली ३२ म मुद्रित

AAJ KI AANKH KA SILSILA (Poems) by Harish Bhadani Rs 30 00

विराट अल को
उत्ती के अगो को
अंग दा
यह निनिना

| | |
|----------------------|------|
| मैं तुम हम | ६—४८ |
| मवाल हा जाता हूँ | ११ |
| मुझ में बहुत पहल का | १२ |
| उम्र के ठेठ जान तक | १४ |
| पट आर पीठ की | १५ |
| मर अनलात में | १७ |
| मूरज के साथ | १८ |
| प्रत्यक्ष रात का | १९ |
| आ मर मामने आ | २१ |
| एक वह | २३ |
| मैं ही की है | २८ |
| हा मूरज के बेटे | ३० |
| मन भारी कर लिया अगर | ३४ |
| गनिया पाटिया | ३५ |
| मुझे प्राण दता | ३६ |
| भीड़ के समुदर में | ३९ |
| मांग की हथनिया में | ४७ |
| बहुत गलन जीत रहे | ३७ |
| आ गर्भिणी भवता | ३८ |
| वह क्या हा रहा है | ४० |
| मन कहा रहे गया है अब | ४२ |
| गुन हमारे मन | ४३ |
| आनन में | ४४ |
| समय के मूल में | ४४ |
| गाँव की गली पर | ४४ |
| गुलाबी लीन में | ४६ |
| और दूसरे | ४७ |

वे वे सब

४६—६८

वे सब

५१

कुछ ऊपर को उठी

५२

भराव की प्रतीति के बाद

५४

आवाजा के बदले

५६

यकवयक ही

५६

सम्भावना है

६२

वे जो

६४

घटाटोप

६५

यादें

६६

भावनूसी रात के कोठे में

६७

आज

६६—८८

छोटा बहुत छोटा

७१

जब भी बैठता हूँ

७२

सहज नहीं होता

७७

खुरदरी हथेलियाँ

७६

घरती पर एक और घरती

८२

आखों का आगन

८३

सामने पड़े

८४

पाव-पाव चलने लगी है

८५

कुहासे भी हदों में

८७

अस्तित्व को विस्तारती

८८

मैं तुम हूँ

सवाल हो जाता हू

सवाल हो जाता हू
पहनकर शोर की मुबह
रघ दमा है
सीढ़िया हानर सारा पर मुझ
सहसो हुई सड़क पर मुहान
भसा मगता है

हा जाना बनार
ता मुन पाता
टहराव भी हाना पटना है मुझे

मुनने रहना पड़ता है
पमगी घड़-घड़ का
मजीत का कुमपाते के माप ही
आम ताम की
भीर भीर मुर्त आवाजा का भी
घारे का रिमात

छुम मुता रहने का धीरज
पलट हा

मरक जाते हैं सीढ़िया म
मन्दा मन्दा पाते
हाल जात है
मन्दा मन्दा बनार म दशा
भीर टूट जाता है
तुही तुही नीचे

बिना बीते ही
मन्दा मन्दा

मूरज के फिसल जाने से
 छपक जाई सियाही दखता में
 पहुँच जाता ॥ अपनी देहरी
 रगड़ता हू खाली हथेलिया
 दुखनी एडिया
 पुकारता हू सीढ़ियो को
 आगन म पहुँचा देने

मुँह स ही
 टूट कर बन
 बौने सवाल दाँरा
 घर लिए जाने से पहले ही
 जोड़ लेता हू साझ
 सोचता रहता हू
 कुछ भी नहीं हूँ मैं
 महज एक सवाल के सिवा •

मुँह से बहुत पहले का

मुँहसे बहुत पहले का
 यह कुछ
 उम्र की बसाबियो के
 टूट जाने से दहा है
 और कुछ
 ममी न पाया
 मुँह बनते हुए को वह
 मुँहसे अम्बीनारा अलगाया गया है
 बहुत कुछ जोर भी
 जो रास्ता रोके हुए था
 मुँह से ही तोड़ा गया है

इन धेरिया के पार
अपन पाव रख दू
टूटे हुए म स तिवल कर
उठ गया है प्रश्न

तोहो का अय'भुस न मानना है

मैं, अब तब जिये
बदसूरत अहम,
एक चहरे क दमा चेहरा
बिबरिरी इतिहास पर भापें पिराना हू
ग्रीज के हाथो झटक देता हू
गारा उसी के सामने

मगर मिटता नहीं

पिसता भी नहीं है
मेरे सामन का प्रश्न
और उठ कर फैलता है
देखता हू मैं
आव'ग को छपीडा फेंकने से
घाली हुई मुट्टियां
फिर अगुनियां लाइता हू

बिस दिला

तई मुटियाद को रेखा बनाऊ
कोन सी माटी दिगाऊ
कदा-कदा
और बिलता
बिस तरह
रखा जाता है मुस न
आवन न
टूटा हुआ
अबना मैं
ताइया के बाद बटुन कुछ और
मर पाग होने क
न हो'ग दुपटा हुआ

अबेता मैं •

उम्र के ऐंठ जाने तक

उम्र के ऐंठ जाने तक
सासना ही है मुझे
सदी हुई हवाआ का आकाश
इसलिए खींचता हूँ
अपने भीतर तेजाब
धकेलता हूँ लहूँ
ठहरे नहीं सिफ़ दौड़ा करे
मगर दुगधती हर सास में धूल
उतर आती हैं मुझमें ठंडी सलाखें
छील देती हैं वे
मेरी देह का पाताल
भोच देती हूँ मेरा ग्रहाण्ड
निकल जाती हैं मुझ में से
कुछ और ठंडी हो

सोचता हूँ
जाड जोड़ से निचुड़ता मैं
यहुत ताज्जा रही हागी ये
मेरे होने से पहल
गधाती रही हागी य सासा को
घाती भी रही होगी
मुझसे पहल की दुनिया के धुआँ से
सोचता हूँ
गई सदी के बुढ़ापे में जमी पीढी ने
निर्वोय होकर भी
पीरप दिखान खा लिया हो
मास लोहूँ
एन हवाआ का
और फँके हा आकाश वह बर
ये बकाल
सहन के लिए ही मर सामन

निष्पृह निष्पाप बढे हैं
 मेरी दुनिया के
 ये मास भभी लोग,
 मुझकी
 मुझमें बनी इस भीड़ की ही
 फिर फिर चोटना है
 बदनू पिय जान का मरना ही विरोध
 हर क्षण उतरता है ठंडा जल मुझमें
 पठ तब तोला जाना हुआ मैं मोचता हूँ
 बदनू और बदनू पिय जाना
 हाँ ताँ मचती है मेरी विषमता
 किंतु मुग में
 आग जाना भी ताँ है
 मर जान की पहली जलन •

पेट और पीठ की

पेट और पीठ की
 दीवार के ठीक बीच
 मुझमें भूल ग बड़ा है दिन
 घाह निकल आता मुझमें
 मिममिना होकर
 भीतर ही भीतर
 गला जाकर धुन में
 मर्ना गली अब भाग्या मेरी
 हाँ मैं हर्षित
 यहाँ धुन कर ही हुआ यह
 र स की पत्थरी मेरा माँस
 जलन कर द
 पीठ के तल पड़ गी ही हँसती

मेरी चेनना तकाजे कर रही है
 बाहर निकाल फेंकू
 घरोहर में पड़े भूख के भूख का
 यूँ उछालू
 टकरा टकरा छितर जाए चारों ओर
 मुझ से ही

उठवाई गई
 ठंडे बारूद की पहाड़ी पर,
 मनु को अदम को

अपना बाप
 और मुच को
 गर इसानी अजूबा समयन वाले
 य वोन नपुसक
 झुरझुराकर देखने को विवश हो जाए
 उनसे नीचे ही
 चिटखने लग गया है
 मेरी भूख का अलाव
 गूगा मुह फटने लगा है

फटे आकाश जसे
 झरूटने लगी है
 पठार का कलेजा जावाबती अगुलिया
 सभ्यता की
 बदशक्ल गुम्बदें घसकन लग गई है •

मेरे अतलान्त मे

मर अतलान्त में

तीन दशक

गर्भाव गहन से बाद जन्म

मेरे विवेक, सुन

मुझमें मर गए हैं

क्षण क्षण खुशत रह

एक लो तीना दशक

इनके जहर न मरनेर हाना हुआ

भग्ना के भाँटे डाना हुआ भी

तुम तो यवजियाँ देता रहा हूँ

पाया दिया हूँ गार दूध से

इन्पात अगारा से

मिलत आए मेरे विराट पोरुप । मुन

आज की मुबह

तर गपान हान की

पहली मुबह है

आ रगू पगानिया न टीक नीने

दा आग्रवाला सुप

आवाठ न दियाला अनीत न पानी पर

जीरिन रघी आनी य दुनियाँ

अनग्री न रहे मुझसे

रमाना हाकर ही

निबारा है न मेरे सादन

दर मरनेरा अघेरे को डीगा हुआ

भीतर बाहर के

माँयो न रगडा दिया है न नू

तु मुझसे निबारा है

मे तन मानन हूँ येय न

जाए जहाँ तक बाँध
 सुलगने लग गए हैं
 उम्र के अलाव
 उम आच से
 नपता हुआ मैं
 आ तुझे भी आच दू
 आ आच दू
 तुझको भीतर की तहो तक
 साक्षी जो हाना है तुझे
 उजलाई उमर का •

सूरज के साथ

सूरज के साथ
 तनाव सम्हाले
 बोल रहा होता हू यात्रा की दूरियों से कि
 दीवार की ओट लेकर ही
 अलगाता है मुझसे सूर्य
 अकेलेपन के समयाश में ही
 जान जाता हू नसी का दुखना
 आकाश के सुराखा से
 रिसते सनाटे में लगा लेती है समाधि
 कुछ और कुछ और
 तलाशने की मेरी तीव्रता
 अछेर के
 मित्रेगिजे हाथा बार बार सहलाए जान से भी
 होन लगती है जूगुप्सा
 सोचता हू
 क्या हुआ गया है जल्दरी

मेरे और मूरज के बीच दीवार का होना
 उतार फेंकन
 साच का यह भारा
 दे सता हूँ आवाज अपनी नींद का
 कोई नहीं आता
 न नींद न ही आहूट
 और जान जाना हूँ मैं—
 भना नहीं सगना
 आधेन और जुगुप्सा की घटाई पर
 गीद का भी मर साप साना
 धक्-धक्कर बिछरती ऊँचा समेट
 सोचना पड़ता है मुझे
 तलाश लू एक और मूरज
 जिसका माघ
 सम्हाल अपने छाया
 हाँ मरूँ मैं एक अनहोत याथा •

प्रत्येक रात को

प्रत्येक रात का
 अन्धकार का बे धाग
 महसूस करना हूँ अरुने पर
 गीली गलबारे जघेरे का घेगाव
 हाथ-पैर के बिना ही
 अन्धकार का दाग
 घामने के माघ के पहले ही
 गीम लज्ज होना है मुझे एक पल ही

का का का
 का का हूँ का का का

कुरेन्ती ही नही मुझ
 पण्डुलम स यधी
 सुइया द्वारा वताई जाती
 समय की जाट वाकी स बिट है मुझ
 फिर भी जाये गालता पाना ह गुट की
 उजान की हयली पर
 पठना रहता ह
 दसिया बाण बनाती
 सुइया व उतार चनाव पठन स ऊव
 सडका पर भाग भाग कर
 सर की ऊचाइया पर ढर-ढर
 पर गलिया चाला म
 रिस रिमाकर
 धूप फेंकने वाल पिण्ड को भी
 अस्यीकार दता ह
 सीन लग जाता ह
 फटी फटी जावाजें
 सायरना सीटिया का गला दबा देने
 दौडता ह असगाव की दौड
 सनाव व ररवाजे से
 यकान की दहुरी तव
 सुइया व कोण
 नियान लाइट और कहकह होकर
 अकुलान लगत है
 ओढ लिए जान

फेंकने लगता ह
 गिन गिनकर छटटी सास इनकी ओर
 फिर झाडता ह
 देह पर आ जमी यकान
 सहलान लगता ह दुखती रगें
 दख ही लता ह
 हाफ हाफ कर टूटने को हाती
 सास साधता मैं कि

यह रात यह दिन
 अलगाव की यह दौड़
 ये मछनें ये चेहरे
 वहीं है सब कुछ
 अस्वीकारता रहा हूँ जिसे मैं
 नहीं टूट पाया हूँ किसी से भी मैं

इतने इनन अस्वीकारों के साथ
 घटुत कुछ स्वीकारन की
 अपनी विपश्चिता पर सोचता हुआ मैं
 फिर महसूस करता लगता ॥

अपने पर
 लीखी गद्य वाल अछेरे का पेंसल •

आ मेरे सामने आ

आ पर सामने आ
 करीब और करीब आकर देख
 मरी आँखों में
 झुनझुने गयात—
 क्या दूब जाया है कोई
 आयात की शीम में
 घोंघन हो टारत लिए हो
 क्या जमीनात कोई दर्द
 पदन हो क्या है
 कदन शरीर मादरर कोई दो
 एक और करीर
 जिम्मे को जडा होउ हूँ मैं
 यह मैं एकता हूँ अब भी सम्बोधन
 आओ हृदयनन दुर्लभा के निग

लिजलिजी दया
क्या उतर जाती है उसके चेहरे पर
क्या ठूस दिए जाते हैं चुप्पिया के निवाले
अपना कहने को
हिलरती मेरी जुबान म
और क्या मागे जात हैं मुयस
सहू के तराजे

तू जिज्ञासा नहीं है क्या
म सही सवाल है क्या
पूछा गया मुझसे

त रख दण अपनी हथेली पर
मुयस टूटकर बिखरते ये सवाल भी
हाथ होता हू
जिन कतारा क
छाह हा जाता हू जिन पावों की
उन्ही से टूटकर
क्या होते रहते हैं अलग अहम
क्या तोलने लगते हैं मरी विरासत
क्या उछाल देते हैं
चौराहा पर मर सपने मेरी एपणा
फिर क्या अथ रह जाता है कतारा का
कस पढ लिया जाता है
हूरियो स, जुड़े रहने का धम
और क्या क्या
खाकर जिया करता है वह अलग अहम

एक उपाड कर आखें
भर लिया करता हू जिनसे
अपना भीतर बाहर
नामूर हा जात हैं व माह
दुखती तलाश का शरीर लिए देखता हू रास्ते
जेबा म
चहरे, भरे, निकले हैं लोग

२२ आज की आय का तिलसिला

चटा लेत हैं

हर ज़रूरत पर एक चेहरा

काब की नलिया म बनता है

सह मास हाड

गणित निचोडन से टपकत हैं

विचार मस्कार

साचे ही होत हैं सबघ

आ आ मर आखिरी पढाव के स

कैस बहू

काठ मी पुनलिया को आदमी

आ मैं-नू मिलकर रखें

समय की छाती पर सवाल, पूछें—

आदमी आदमी से जुड़े

नाफिला हो पाया जिये

तब क्या ज़रूरी है

सहू क तकाजे

कोई विरासत

अलगाया हुआ अहम •

रुक वह

एक वह

पिरेमिड उठवात रहने की हवस

और दूजी—छाड़यो से

खुले घरातल पर आन की कशमकश

इ-ही दो

आदमजात आदतो का

मायना है जिन्दगी

दोस्त मेर जीन के लिए
इन दोनो की जद्दोजहद का ही नतीजा
मनु इडा स
मरा तुम्हारा आज तक पहुचना

मैं और तुम साक्षी थे आज भी हैं
 सही को गलत
गलत को सही बताकर
इतिहास हो जाती इस जुवान के
चिपकाते रहे है
इसी की विदिया के दमाग आखें
बार बार ज म लते
एक दूजे क शरीर पर मैं तुम
 व हैसियत

भोक्ता साक्षी
आज फिर तकाजो की बुनियाद पर
पिरमिडा स खाइया को पाटने
एक ऊचाई घर बनाने के खयाल रचन
जो उठ आवाज
उस गलत कहने से पहले
उतारन होग मुझ तुम्हें भी
चहरे पर बड़ा चहरा
इन मोटी तहा क पीछे
असलियत है तेरी और मरी
छोडकर परहेज उठाना ही पड़ेगा

असल चेहरे स
सामना कर लेन का खतरा
बाधने हागे तुम्हें मुझ अपने उनके भी
हाथ पाव मुह भी
जो असल के सामने पडते ही
 लूटन लगते है
मत्तानद सहोदर का सुख
और बापों म मरी रखते हैं ऐय्यामी

तुमकी मुसकानी देनी है सजा

उन लागा को

जा अपनी आँखें मीच

छुरदरी अमुलिया आजकर

खुलवात है

भय से चप पड़ी आँखों को

पहचान लना है उन्हें

जो पत्थर परचात हैं जठराग्नि से

अपना केवल अपना

झाना बनाए रखन

धरवात रहत हैं यात्राए यात्राए

और धरत रहना पड़ता है

तुमकी और मुझकी

चरैवेति चरैवेति

जिनसे बहाने पोषत हैं

प्रेम-वितर की गरिमाए

बता क्या सम्बोधन दें उन्हें

अपाहिज है बदलू फँकते हैं ये

सारे ये सारे अक्षर।

छा छा उगल तू मैं ही बके हैं

यू नही होने देना है

मुझे तुमकी और तुम्हें मुझे

तब आ कर लें

अपन ही भीतर जीवित

मैं से हूँ बूँ होने का हीसला

छरीच लेंगे

सवाद के सीधे नाखून

असल पर पड़ी झिल्लिया

रख देंगे असल के सामने तुझे और मुझे

दिखाएंग फक

इकाई से दहाई का

अतीत और वतमान का

जीवेपणा गर्वपणा का

तुम न तुम न हो मैं
कर पाएंगे हरफगोरी
बहुत सम्भव है
भीतर तक लकीर जाए तुझ और मुझे
सूरज हाथा ही
रेत दर रेत आवत पावा पर
ठहराव का पहाड़ रख दिए जाने से
दुखत हुए लोग

झुलस जाने के भय से
मैं और तुम
न सम्झान पाए अपनी हृपलिया हर
बदलाव की एक और जमीन
बिना आहुट
दरक कर अलगा जाए
पहलुआ का हरावस
पोछ कर फिर भी खोज के साग
रगन लग जाए
आखो म फिर काई खोज

ठहराव का सबब पर
सवाल ही सवाल न उठा दे
तप न दें
फट गए मास पर फिर काई गुबार
आ बावन लगें मैं और तुम

जिरह बखतर को नहीं
हाठ माम की दह ही होती है हराव
एक और कतार
जड़ी हाती है इससे
शरीर और प्राण पीने वालों की
नेज छुभा छुभा कर
नकरवा दती है समझ का रिश्ते
उलटवा दती है

कदम-ब कदम

हाथ-ब हाथ बिगू गए सब कुछ का

और से सेती है

जिन्दगी की सड़ाई को

अपने ही लहू की हृदा में रखने का

हलफिया वयान

निर्णायक दौर का

धीरज नहीं होता इस कतार में

और सड़ाई टूट जाने का

कारण बन जाती है

बिस्ता भर समझ

और एक ही घालिस्त पट वाली यह कतार

मगर इनकी भार से

मरती नहीं फिर भी एपणा

ऐसी ही सत्ता

होना है तुझे और मुझे

आज से ही पडनी है बल की सुबह

आ हम हो लें पहले

मैं और तुम

हो लें एक शुरुआत

जब भी लगू मैं तुम्ह

बदशकल ठहराव

तोड़ दू वही से भी मेरा मुहाना

और मुझे भी

महज धुआती हुई

इधन लगी जब तुम

सास सास कर

अगिया दू मैं तुम्ह

तू खोजे और मैं कीलू

कीलता जाऊ

वे अक्षर

ऐसी विरासत सौंपने वाला पर •

मैंने ही की है

मन ही की है
बूढ़ सूरज स
वसाखिया छीन लेने की बोशिशे
मैं ही उचकाता रहा हूँ अगुलिया
आया म घोप देने कि—
घरती पर आ गिरें इसक बाच
या फिर जल जाए मरी अगुलिया

जरूरी नहीं है
वास्ता दू इसे किसी बुत का
चोखें उबाव बन गए
मरे मुनू के हाथा
मसोस कर फँकी गई
पहली पोषी से अधिक
बन भी तो नहीं है मरे लिए
पंशर बोयले स लिपि नुचाओ का
और न ही हुआ है
इतिहास बनाने का मुझे इशक
मैंने मेरे ममम ने
धीरज की पतीस हदें
लापने क बाद लिखा है
नपुंसक सूरज के खिलाफ यह दस्तावज
गुलाम है यह
बूढ़ क पहाड पर चार पांव टिका कर ही
बोलते रहन की आदत का
कभी नहीं दखा इसन
अपन ही नीच स उठती
बन्वू से घुस्त हुए मुस
मकाडा से
मुतरा जाता मरा शरीर

गलियारे काठता रहा है यह
 भुचते जाएं पयाल
 और होत रहें अलग नश्ल की पलाटून
 बघा दे दे कर
 उठाया जाता रहे जिसे ऊंचा और ऊंचा
 है थोड़ी बजह
 पोरा जाता रहे
 जीने की ललक में ठंडा जहर
 और नकारी जाती रहे
 तकाजा की इतनी बड़ी हकीकत
 किस कानून के तहत
 सजाए जाते रह
 कीलें ठोक-ठोक कर मैं मेरा समय
 घेरे जाते रहें काटो के बाड़े में
 ठूसा जाता रहे
 नारा का गुदा मेरे गले में

कानून बाहर नहीं होगा यह पूछना—
 किस भूख के लिए
 बनाई जा रही यह आदमजात घर्बी
 क्या-क्या पकना है
 जो खर्ची जा रही है कीमती इधन
 कील सी बजूवा दुनिया
 निक्कल आनी है इससे

इसीलिए होता है मैं
 ऐसी ही होती है क्या पेशवाई
 यही है क्या
 आज की इस सभ्यता का सत्य

मुझसे हा हा मुझसे ही
 लिखे गए
 सवाली दस्तावेज का
 अगर यह मायना किया हो

सूरासे ही जाए मेरे बलजे
घुआई जाती रह
मेरी आखें

आवाज भी
आख वालो ।

भापा टीका लिप बोलने वालो ।

बूढ़े नपुसक सूरज के ओ पेशवाओ ।

ब कसम खुद लिखा

यह दस्तावेज पढ़ लो

सुराखने वाला

हर औजार

मेरे ही हाथो से

बनकर

पहुचता है तुम्हार हाथ •

हा सूरज के बेटे

हा, सूरज के बेटे

इस जनस्थान में

अभी-अभी घट गई

अपटना का साक्षी मैं—

बाप का धम—जटायु

सहू की क्षील हुई इन आखा ने देखा है

मीनारो महराबो वाले रथ में

बाध ले गया

सोने के कानूना का

दस चेहरो वाला राजा रावण

घरती की जाई सीता की

वही दशानन

३० आज की आख का तिलसिला

जिसका हर चेहरा
 साम दाम दण्ड भेद के चार पगो पर
 नाचा करता
 यह गण की दुनिया का वाहक नहीं
 अहम की
 ऐंठी हुई एक कठपुतली
 भाषा से कगल कापुरुष
 क्या करता तुमसे मोघा सवाद
 शतगुंजो पर रचता राजनीति
 प्यादी से धत्रीर
 गधे से हाथी को पिटाता
 वही से गया माड कर माया
 जनक के जन गण की सासा मे
 पापित हुई जानकी
 सुषस धरित तेरा वामाग
 सुख-दुख के
 आदेमो की पहचान जानकी
 सत्ता क पिंजर म
 कममसी कुम्भजा के सासो का
 बुद्धबुदाता ज्ञाग और दुखते आवादन
 दल सूरज क बेटे
 धुआने हुए पडे हैं
 धूलहे चढ तब पर
 आरप्यक बस्ती की गली सडक पर
 हो गई हवाए राख
 चीखो मे पड गई दरारें जासमान म

तुमने मैंने भी नहीं सुना देखा
 बादल पहन
 कभी अगर बरसाए ड दर ने
 यह ता थी तेरी पहचान
 पिघल कर बस्ती
 झकझार फफोच गई वह मुझको

गण के राज
 समाज का धनुष धारने वाले
 घट गड़ अघटना स
 दुश्चिन्तित मत हो
 पीठ वधे तरवश म भरे इराते
 हाथा म लेने का समय
 ले भुझसे सूरज के बटे

मेरा तो होना ही इसम था
 उठे बाप का धम—
 जगल को जनस्थान
 बनाए जान की हसरत म
 मोच मोच दी गई
 देह से पाखो से लड जाए
 उडे जा रहे पाखडो के पयत से

दो पजे दो पाखें
 इस बस्ती के बासिद के
 ये ही हाथ और हथियार
 इही स लडा
 दरका दिया दण का चेहरा
 पर सान की लका मे सान चढी
 तलवार लिए था राजा
 तोड गया पाखा पावा को

ऊपरवाला आकाश
 बिना दात जीभ का
 फिर क्या आखें फाड रहे हा
 किमे आवाज रहे हो ?

जये अक्षर के पुजीभूत पोरुष हो
 ला अपन समीप को देखो—
 रच लिए गए कपट का पहला विरोध हू मैं—
 बरफती हुई देह का
 कतरा कतरा लहू

जमी की रग रग मे पोस्ता

सुखमुखी मैं—जटाघु

चुप होन स पहले

तुम स बोल रहा हूँ

सिर्फ दह टूटी है

तिरशूली मत्ता से

सडत रहने का

मेरा धम नहीं टूटा है

भय का मामा मारीच मरा है

तपती हुई बूछ से लेकर उन्न

पला जो पीरप मेरा नहीं मरा है

यं मेरी हिचकिया नहीं हैं

मेरी सासा की इति भी यहा नहीं है

यह तो वह भापा है जिसको

भानेवाले क्षण मे ही बोला जाना है

यही है तेरे पुल की अहम खरुरत

घड़ेगी बारीगर नल-नील

दिशा ! तरी दिशा ! ले देख

लहू की झील हुई मेरी आखो म

दक्षिण दिशा

उडा जा रहा है सत्ता का उडन खटाला

और और छलना का तत्र

बैठा है तरवार पटकता

बाणी क लिए

अकुलाए हुए आज के भोज !

उतर मेरे अंतर मे

इस बस्ती के तीडे गए

एक एक अक्षर को जोड

यही हरावल ले जाएगा

तेरी ही बाणी तब तुझको

वह गए लहू से लेकर सीध

जा अक्षर व आज
आज के अहम तकाज जा •

मन भारी कर लिया अगर

मन भारी कर लिया अगर
सारा आकाश

सिकुड़ कर
दो अजुरी रह जाएगा
दो अजुरी आकाश
बहुत खारा होता है
प्यासी घरती पी जाएगी
पोर पार कड़वा जाएगी

मौसम ता सारे आवारा
जितनी बीती
सी निया जतन स धीरज
फिर भी उघड़ी मन की लाज
हवा की नज़र लगेगी
सारा जग जानेगा—धूर धूर देखेगा
उघड़ी-उघड़ी मन बीती
फिर क्या ढापगी

सुन री बड़ी उमरवाली ओ सास सगिनी
जसा है रहन दे आकाश
मत आहट कर
गुजर जान द मौसम
मत दख हवा के तेवर
धुन के पहरेदार बिठा दे
रख निगरानी
आपा की दहरी व बाहर •

३४ आज की आग का मिलमिला

गलियो-चाटियो

गलिया चाटियो

भटवे दुखा का एष सम्बा काफिरा

लेकर चले है

सामने वाली दिशा की आर

टहरन का नहीं है मन बही भी

धीरज भी नहीं है

मुडकर दण लें

काई गुवार

बरना ही नहीं है

डूबती आहट का पीछा

चौराहा घामे खडे ओ अवेले

दख तो सही

जाखें जा टिकी

नीलाभ पतों पर

हवा म धुन गई है सास

सूये छोर सारे

हाथ लम्बे हो

पाछन लग गये हैं कुहासा

झराखा के बाहर

दूर-दूर पसर नगर तक •

मुझे प्राना देती

मुझे प्राण देती

हवा की सतह पर

आ ठरा है

धुए का अमीम
गहरता गुजिया घेरता
आहटें टाटता
ढापना चाहता है मुझे

सास म घुल
स्वर बाधन म लगा है

सफर क लिए
रास्त खोजती ओ दृष्टि
तवाजे पहन

आधिया स उलझ
बाधिया की
गिरफ्त स छीन कर
क्षितिज के बगूर पर
सूय रख द
देखू दिखाऊ
हसती हुई
धूप का एक और निस्सीम •

भीड़ के सनुन्दर मे

भीड़ के समुदर म
बचाव के उपकरण पहन
न रहू
गोताखोर सी एकल इकाई
उतरता चला जाऊ
अतलात म समान
टकरा जाऊ तो लगे
भीतर दप की चट्टान दरकी है

रतन बड़े आकार म
इतनी ही हो पहचान मरी •

मास की हथेलियों से

नाम की हथेलिया स पीटे ही क्या
जडाऊ बीला के कियाड
 खुभे ही
रिम आया सह झुरझुराया मैं
पितना दुप्राती है जगती हुई यह नींद
 पाछा है खीज कर
फट्टी बमीज से इतिहास
अधरा की छैनिया से तोड़ने लगा हू
मेरे और मेरी तलाश के बीच
पसरा हुआ जो एक ठंडा शून्य •

बहुत गलत जीते रहे

बहुत गलत जीते रहे
मिना हड्डी की जीभो से
 बारहा पुरचे जान पर भी
हाठ भींचते रहे आये भरते रहे
पकड़ कर
झटक न सके जीभा को
झाड़ न सके उन पर उगे काटे
 बताते उन्हें

कटी जीभ की पीड़
सुनने देते उन्हें
अपनी ही घर घर आवाज़

बहुत गलत रहे
टहल-टहल कर
चवाते रहन वाल दाता द्वारा
गस्सा गस्सा मास
तांडे जान पर भी
चिड़िया ही चिपकात रहे
अपन घावा पर
उड़ात रहे मक्खिया
उलट कर ठूस न सके
उही क मुह म
उनके अपने ही हाथ
न रख सके एक टुकड़ा पत्थर
उनके खूबसूरत दाता तले
एक बार ही दपते तो सही
अपना ही कच्चा मास खाते उन्हें
कितना गलत किया
न रख सके घर के बाहर
तकाले पहन आती
एक भी सुबह को
सुबकिया भरती गभिणी रात को
न घाट सके
चीखत आघर का गला

बाग हम भी पहन लिया करते
धूप छान छानकर
बिजली क तिन
सा जाया करत
बिछाकर मनमनी सुविधाए
सा शायद
अहमास हाना हम भी

अपन सही होने का

उपक वितना सही है यह—

अब तब की यात्रा में

न जान सके

एक बार भी सही हाना

मानना पड़ा है आज

अपन एक एक क्षण

एक-एक शब्द का गलत होना

नहीं जानते रचना-खालना

स्वयं को सिद्ध सही बनाने वाली भाषा

फिर हमारा किया अब

हो भी कैसे पाई अब •

७१ गर्भिणी चेतना

ओ गर्भिणी चेतना

आज हमको समय की सड़क पर

उम्र के आकड़ा का पत्थर दिखा है

रोशनी से धुली हवा

खोजती मांस को

साथ का अहसास छूटा लगा है

आ जीवपणा

अभी सामन था

बड़ा सा रचाव

सिर्फ आकाश रह गया है

समय सा बुना था जिसे

तस्वीर जैसा घुघला गया है

आज हमको लगा

घाटिया की तलहटी की नुनियाँ पर
उठाय गए अथरा के सपन

बिना रोद के कागजा पर
घट्य वन उड रहे है
आख के सामन

एन भी चहरा नही है

अधरी अगुलिया

स्वरा का मसोस जा रही है
डूबती हुई चीखें

देह के अस्तित्व से टकरा रही ह
तुमको तर भ्रूण को ढोती हुई

हडिडया चिटखिटाने लगी है
बुछ दूर पर

आकडा की मुकीनी सलाखें उठी है
तहा तक खुभा चाहती है

एक साथ दो दुख झेलती

जो गर्भिणी चेतना !

तिल्लिया म

कभी स वन हम रूप को जम दे दे
अधरा म रोशनी फँकने के लिए

जमीन नई तोडने के लिए

इस देह के टूटने स पहले

जीवेपणा की नई देह को

जम दे दे ओ गर्भिणी चेतना •

यह क्या हो रहा है

यह क्या हो रहा है

जिस तलहटी म

हम आग रखन चले थे

४० आज की आख का सिलसिला

उस तब पहुँचने
 अभी शेष है दूरिया
 और इधन चुकी जा रही है
 यह क्या हो रहा है
 इंधन जो उताही रही
 पास-पास
 आग हाती रही सास के साथ
 सुपिया को अदाज
 आगे भित्तिज तब
 बिछी बिछी दते गई हैं
 इंधन की पूरी फसल
 वही सामन
 आज बूढ़ा पसर रहा है
 यह क्या हो रहा है

हा यह इंधन
 लहक पर आवश होती रही
 चिनगिया सी चिटख
 राशनाए गई
 अम्बरा की सडक
 बालती जोडे गई घटकन
 पाव दर पाव छपते रह

हा यह इंधन
 जाच हो-हो
 बनाती रही है लहू
 हरकता म बदलती रही है यह
 जीने का भकसद

हरकता के इरादे
 हुए ही नहीं है उफनती नदी
 कटा ही नहीं है
 दूरिया का पठार
 फिर भी यह इंधन

चुकी जा रही है
यह क्या हो रहा है •

मन कहा रह गया है अब

मन कहा रह गया है अब
गद्य भीगा मन
धूप में तपा
आधिया के झ्रूण में
धिस धिसाकर रह गया है
विण्ट भर
सूख हुए वाक्य का

सपने सपने कहा रह गए हैं अब
पीले धरे पत्ता
टूटी टहनिया
इधन समय
दूहा बनाया है

सास सास कहा रही है अब
जी रह तमाशा पर
डुंगी पीटत
मदारिया ने
गूथ दी हो एक रस्सी
भीतर के भाँठे से
रगड़ खा पा
गुलगी है बिनार से •

सुन हमारे मन

सुन हमारे मन

मुट्टी में सपना है अनागत के लिए

नहीं उनके लिए

गए कस से लगी

मुदाँ खराचें सेकत हैं

उन आखा के लिए भी नहीं

जड लेती बिबाडें दूरिया का देण

उन पावा के लिए नहीं

धमक धसते हैं रेत में

जगल न काटे

ढाए नहीं धरती पर उगी बूचड़

आदता की भार खाए

सहम सशया से

हकलाते नारे लगाए

सुन हमारे मन

अधेरी बुजिया के पार

देख लेने का यौता मिला है

दशक मवतरी के बाद

आ आहटा की

सौध लेकर चल

माक्षी जो बनना है तुझे

जिस मुहाने पर

अनागत जन्म लेगा

वही वही मुट्टी खुलभी •

आगन में

जागन में
अवे ने टीसते है
समुंदर में जैसे हवाएँ
चारा ओर स घर खड़ा है चुप
टकराकर बिकरते बरस जाते हैं
आजी नहीं है
आखा में अभी तक साथ
रात के लिए रचे नहीं सपने
साथ ही तो है
धूप में नहाती
हुमकती आएँ बतारें साथ हो ल •

समय के रूप से

समय के रूप से
जमी भी उठेगी आधी ओढ़ लेंग
बाच लेंग
निमाणा से बुना जाता
अभावा का पूरा व्याकरण

पसरेगा जब भी सामन
ठटा घुमा
आपा की बतरनी
पान डालगी
बिसी भी बीच स

४४ आज की आख का सिलसिला

शौकीन दुनिया की नज़र में
बदचलन
पर धूप से ही
रास्ता लेंगे हमारे पाव •

पानी की सतह पर

पानी की सतह पर
बिम्ब धोई उतर आए हम तरह
एक तारा टूट जाए
बीध जाए अग्निरेखा
बैचुल आठ फिरते पिण्ड को
दाना धुवा तक बीध जाए

झुलस जाए
बाली रात के हर एक क्षण को
चोट जाए
सूखी खाल जैसा भीन का नमारा
क्षितिज फट जाए, सहम गूजे
बुदबुदा सी फूट जाए नींद

उतरा हुआ वह बिम्ब
पीरा से रचे उपा
उतरें सूरज के मुहाने से
झलक साती किरण साधें
सारी दूरिया के पार
एक तन मन जिय वह बिम्ब •

सुबह की झील से

सुबह की झील से
जितना भी ले सके पानी
धा लिया
चेहर से रात का गर्दों गुवार

रत सानी
पड़ लिए सपन निहार
उम्र खा मुलगी अगीठी न पकाय
द दिया
सह सा रग सबको
सोच के सारे बिबाहे ताड़
सड़क पर आ गई तलाश
भर ली धूप से पारात

बाना म ढलने दिया है सायरन
हथेली से पाछे गई है
आख म घसता धुआ
देखे गई है

टुकड़ा-टुकड़ा कालाहल
गुजरता गया करीब से
सूरज भी जान बच
पीठ पर आकर उतर गया
ठहरी नहीं एक भी पहचान
दूर के लिए कोई भी साथ

या ही कौन
पारात से छिटक कर
भाग जाती ज़िद
याम लेती हाथ
शहर तो भागा जा रहा था
काच के आगोश में दुबकने

सनाटा समेटा
 तालू में ठूम लम्बी जीभ
 सो लिए सारे सवाल
 बल सुबह
 फिर झील होगी
 घा लिया जाएगा फिर
 रात का गर्दों गुबार
 घट ही लेंगे और कुछ और
 न सही हिनक्ते स्वर
 पानी की गरज को मार खाई
 उठती हाट का
 दा चार अक्षर बेच
 लौट आई रेत के टीले
 बन सुबह फिर झील होगी •

और ईशा नहीं

और दशा नहीं
 आत्मी बन जाए
 सवाला की
 फिर हम उठाए सलीबें
 यहत लहू का धरम भूल कर
 ठोकन दें शरीरा में कीनें
 बल हुई मौत का
 दुहरा लिए जान से पहले
 तेवर बदलते हुए आज को देख लें
 बहुरूपिया की नकावें उलटने
 हकीकत को फुटपाथ पर
 खानने की सजा है जहर हम लिए

गुजरात का
साथी बना देने से पहले
तेवर बल्लत हुए आज की देख लें
साधु नहीं आत्मी बन जाए

रची फिर न जाए अधूरी श्रृचाए
बाचे न जाए गलत फलसफे
जिन्गी का नया तर्जुमा
कर लिए जाने से पहले
इतिहास का
आज की आख से
सिलसिला जोड़ द •

वे वे सब

वे सब

वे सब

हवा ही तो भरते रहे मुझ में
कहा है कितनी बार मैंने
मैं नहीं हूँ
आर पार जाने वाली कोई सुरंग

सुना ही नहीं उहाने मुझे
किंतु मैं
सुनत-सुनत उनकी उन सबकी
गले से एडिया तक हा गया इकमार
आदमजात पुगा
फूँक ही दें
बद पीये में बची खुची हवा भी वे
आखिरका तो
फूटना ही है मुझे
धक्का जा गिरूँ
बरसों से बलई की जा रही
उनकी देह पर

तब कौन से
बागजी टवाल से
पाछेंगे वे
उजलाया शरीर •

कुछ 'ऊपर' को उठो

कुछ ऊपर को उठी
कुछ नीचे झूलती हडिडया
मास के साचे

लहू चारा बार
नीचे ऊपर ले जाती नालिया
और इन सबके ऊपर
भीतर की तरफ खुलते
कुछ मुराख छाड
सी दी गई है खोल
गोरी काली और पीली

यह खाल चलती है
न चलने पर
हाकी जाती है
बोलती है बोलती रहने पर
गूगी बना दी जाती है
तब चीखती भी है
पर वरमा बाद

जैसी भी है
इस देह की सना है आदमी
एक ही तरह बहता है
एक रग लहू
पर अलग होती है
चेहरे की सलबटा की झाइया
छूटती रहती हैं
मोटी पतली सूखी भीगी पपडिया
चेहरे से अलग रहने
चेहरा करता रहता है छोटा बडा
अपन मुराया को
हा इसी देह का चेहरा
हाथा का बदल

१२ आज की आँख का सिलसिला

तकुआ से फोड देता है
सामने आए चेहरे ने वे वाच
जिनमे देखता है
पुद का निपट नगा

टुकड़ा-टुकड़ो म देखता चेहरा
भागन लगता है
अपन आप से डरता हुआ
जाखें कहे जान वाले
दा सुराया की सीध मे
ठीक भीतर का आर
गोल हड्डो की छत के नीचे होता है
कारीब शिराआ झिल्लिया से
बना हुआ पिण्ड
देखना सूधना मोचना
होता है जिससे
इमी गूदे मे होता है
अलग ही सूधना
सोचना फिर दपना
इसके कहते ही
बदल देता है लहू
चेहरा आदमी से आदमी का

यह गूदा ही भगाता है
और चेहरा
भागम भाग इधन खोजता है
लहू वाली अगीठी गम रखने
जा टकरता है
अपन सरीख दूसरे चेहरे से
कर लिमा करता है इधन अपनी ओर

हाथ हाथ से नाखून
नाखून से हरकत होता हुआ
छुरचता काट देता है

हम शवल का ही
सडा भी लेता है
अपने ही भीतर तत्तुआ को
हाना बनाए रखने
बदलू फकता है
नकार देता है
किसी भी दूसरे के
होन का सदम

खुभ न जाए
रोशनी कही
समट लता है स्वय को
अधियारी तहा म
फलना न पडे
दूर तक देखना न पड
पुकारे जाने पर
ठहरना न पडे कही बीच मे
विराट स टूटा
कब तक यह बौना रहेगा
कब तक रहेगा
अजनबी अपने आप स •

भराव की प्रतीति के बाद

भराव की प्रतीति के बाद
और गहरा जान वाला मरा शूय
भरा जाना है जिनस
व सब जा बिपके है
मरी पकड से दूर
धूमत टलाऊ क्षितिजा स

वे सब समता है
 मुच से चीमे जान को ही
 घेरे हुए हैं मुझे
 पी जात हैं मेरी एक-एक चीख
 आज तक नहीं टकराई लौट कर
 उनकी ओर फँकी गई
 एक भी आवाज मेरी

अपने घर की
 एक एक दीवार को
 दशका के आकडा से भरता हुआ
 बहता आ रहा हूँ
 अपनी भाववाचक सजाआ से
 रचें, मुझ जैसा ही
 मगर आज के मुझ जसा नहीं
 जिसकी अजमी देह पर ही
 जड दी जाती है
 मास की एक और पत
 बाहर आत ही
 फिर एक ठण्डी खाल में
 मी दिया जाता मैं
 मिट्टी की गंध को
 मुर्दा लोहे की दुनिया में
 बदल देने
 धौना बना दिया जाता मैं
 जिया करता हूँ
 आधा पट अधेरा खाकर

वे सब
 अभावा की अदेही सनाए
 आदिम आकार ले लें
 आवाजें ही लौटें
 आवाजा के उत्तर में
 उन सबसे कहता आ रहा हूँ

मेरे करीब और करीब आए
मुझ पर मढ़ दी गई
खामोशिया नाचें
दिखाए मुझ मरा ही लहू नि
लहू साखन के बीसा करतगा
वाद भी मुझ में
वचा हुआ है लहू

यह भी ता दखें व
उतार फेंकी है मैंने भी मरणाए
द दी है जल समाधि
पुरपोत्तम अहम को
नही रखा है घासला भी पितर के लिए
बहते-बहते थक न जाऊ
यह मैं हूँ मैं आज का आदमी
मरी ही हैं ये आवाजें
शूय मरे जाने खामोशिया नोचें जाने •

आवाजो के बदले

आवाजा के बदले
आवाजे भुगताने अजनबी बने रहने
और देह को देह से
रगड़ते रहने के अक ही दागते हैं
चमड़ी के कम्प्यूटर
जाड आता है अका का
आदमी से आदमी
आदमी से औरत का सवध
साचता हूँ

इतनी ही बन पाई है
 पहने आत्मी स मुच तक की
 सम्यता-मस्ति
 अनिवायता है
 इह टोपते रहन की—नही
 विवशता है मेरे जीने की
 पड़ता हूँ इनस छपती परिभाषाए
 मर्यादा का ठप्पा लगना ही
 सही हाना है किसी भी सबध का
 बिना ठप्पे का भाई
 भाई नहीं होता
 बटी बटी नहीं होता
 बाप भी नहीं हाता बाप, मा भी नहीं
 कोई कुछ नहीं होता किसी का

और सुविधा के तबाजे पर
 बदल जान वाला ठप्पा लग बिना भी
 गलत हाता है हर सम्बन्ध
 मसलन एक द्रौपदी का
 पाच पत्तियां मे बाटना सही
 कुत्ती स कण का हाना गलत
 लक्ष्मण का
 शूषण का नाक काटना सही
 गोरी सीता का कैद
 रावण का बहशीषन
 सही, नगर बधुआ की पूजा
 गलत जीन के लिए
 शरीर बेचन की विवशता

गलत है
 शापण पूजी का खुलासा
 और सही
 चीजो स आदमी तक का
 बाजार लगा लेन की हवस

चक् स्लावा का
अपने पाव चलना गलत
रडस्ववायर स
लगडा कर चलन क आदेश सही
गलत है
बलिना कारियाआ के जुड़ाव की परकी
जुड जान के लिए
विदतकाग-गुरिस्ला हाना

पठार नदिया खाकर
जनता क राज का नारा ता सही
पर काल पील चेहरा पर
तरता द गलत
किरकिराती हवस पर
चमडी के खाल चढा
पुर्जे खोजन भर का ही धडकत है
आदमीनुमा कम्प्यूटर
पुर्जों स ही बुझाते है भूख प्यास
दा क्षण हाफ कर ही
मान लेत है सम्बन्ध की इति

भीतर बाहर का भाव
जबेले हान का दुख
बदनु है खयाला की
खसल है दिमाग का
प्रतिन्रियावादी है व
जा चीखत है दवावा के विरोध म

मशीन मशीन स आकडे
आकडा स आत्मी बनान वाला के लिए
गलत है
जुडे रहन की हमारी एपणा कि
हम अक्षर बटारें
बालें एक भाषा

देह से देह जाड कर रखें आदमी
 उखाड़ते जाए
 जात रग घम बी
 बड़ा पावदिया बी
 भाडी तस्निया
 यह—तेरे मेरे दण का अर्थ है—
 आदमी—दुनिया आदमी बी •

यकअयक ह।

यकअयक ही
 कर दिए जात है समाप्त
 डलान के मुहान पर
 पहुचने के ठीक बाद
 अब तक लिए जाते रह इम्तहान
 सटका दते हैं गले में
 इल्मी फज स पावद मास्टर
 असफलताओं का बड़ा इश्तिहार
 और बहलन लग जाते हैं लाग
 चलन के नाम पर होती
 कल्पक राक एन राल की
 मुद्राआ स
 आ ही जाता है बच जाना
 बीच में चल लेने की
 किसी भी विवशता से

खोजते रहते हैं बिधारे दवा
 तरो ताज्जा रखने खुद का
 प्राकृतिक चिकित्सा ही
 रास आती है उह

अपनी जमात का मुजुमी
बनाए रखता है इन्हें
बीचड का कमल
बचाए रखत हैं शारब गिना से
चलती जो रहती है सामन
पट्टा चौ फले दागाना स
लनी पनी बतारें
यू हल्का सते हैं
अधिपति अपना अपच

बलीसी भिचन पर ही
चाट लग जाती है इन्हें
दुख भी जात हैं कभी
रक्षा के अरक्षण स
निवासिय की पूजी की तरह
खच कर देत है सासे
कुछ भी नहीं बचता
सह मास के सिवा
खुद को ही बताते हैं
व्यास का बेटा शुकदेव

पढाया ही न जाए
जीने का अलिफ वे ते
तब हा ही कसे ये
परम न सही
अन्ना ही भट्ट भट्टारक

इसी कारण
बिखरते टूटते है ये
नाम हो जाता है सरकस
पड गया जो भी अकेला वह जोकर

पानी पानी हा जाती
जीने की बेचनी वह महज तमाशा

दिघता नहीं
अनुशासित हवा में
फाइला के घघटे में बैठे
सभ्य लोगो को
हाका मचाते लोग

मेज पर पड़े मक्खन
बढ़ाव रोटी रुमाली सलाह को
समर्थ अपना आज के
फ्रीज में तरतीब से पड़ा है
उनका भविष्य

पीटें पीटते रह
अपन गले में
बढ़ लें तोड़ने का बंद दरवाजे
बदलवची घामे खड़ा है सतरी

ऐसे ही क्षणा में होता है मुझे
अपने होने का अहसास
ढलान के मुहाने ही पाता हूँ खुद को
चीखता हूँ
उल्ट कर फेंक देने
याना को धी जाती नियति—
पोस्टर आश्वासना के गहने

नहीं, नहीं होना है
मुष्ण जैसे किसी एक को भी
अपन सोच के रचाव से अलग
टूटत आकाश सी
आवाज में यह कहना है—
पहचान का
बदल बुझल नहीं दूंगा
मानो भले ही कण दूजा
जीने के लिए
रचा गया
जुगराफिया मेरा नहीं है

हा नहीं सकती
 तिजूरी की गणित मेरी
 सपना न देख व
 मलीवा से लदा
 चढ जाऊगा फिर पहाड पर
 क्षमा करना उह बहता हुआ
 ठुक्वा लूगा कीलें

व मुनें समय भी लें
 गूजती फिरी आवाज
 अब हा गई है हम
 में' नहीं अब य हम ही देखेंगे
 कौन है व—आदमी स
 आत्मी का तोड
 बनाते है अजूबा
 ऐसे सभी

चक्रवर्ती पुतला को
 गहरे बहुत गहरे गाड
 नई दुनियाद पर

आदमी की
 एक ही दुनिया बनान
 बालने लगे है
 बक्षरा के आदमी •

सम्भावना है

सम्भावना है
 बहम के
 मीला लम्बे बारघाने म
 उमापिया
 बनन लगे फिर

बाजार की चिंता नहीं होगी

इस बार

क्याकि व

जो खुद का मानत है

अदम का अदमी तक

पहुचन वाला पहला सिरा

और मात्र की

हर जात का

पहला फोटू बनात है

महानगर' स 'भवई ब्राड तक

सारी वैमाग्रिया का

थोफ परमिट हथियान

व ही हाग

मनीका ए-खास

हा यह भी जाय

पुर्जे बने

बुप्पिया ही हा रह व तल की

उकता जा गए हैं देखत

रामन-बरामन के लिए

वहाश क्यू

घुटत जो रह हैं व

चूल्ह-बलेजे के

घटा टापा स बिचाये

सम्भावना इसकी भी है

मुद्ध स्तर पर चले

छोटा-बटा हर कारखाना

हडताल का सपना न आए

चीड़ी तो

हद है—मोच का ऐमा पुलाव

मूड़ी फाकन

मृतने तक की ये मनाही

ली जाय दी जाय न न जा
छोन कर दा हाथ
थमा दी जाय
वसाखिया की चाल पर ही
रजगार की सुरक्षा है

कानून व तहत
पहल ही लिख दी गई है कृचा
सौगधा खा
सर पर रखी
यवस्था की किताब म •

दे जो

व जा
दूरिया बिछा गए मेरे लिए
व जो
मुझ पर चुप्पिया बाध हुए है
उन सबको दिखाया चाहता हूँ—
शब्द के जगस नापत पाया म
फट आया है चौथा दशक

देश विधान ससद और चुनाव
भाषणा-याजनाआ के
बावलिय काटा से अजूबा से खुभा
लीर लीर हा गया हूँ मैं

मेरे रचाव का वहम
लिए हुए ही न मर जाए बूढी सदी
पकड लू गिरीवा हाथ लम्बा कर

६४ आज की भाव का सिलसिला

समय के नपुंसक मसीहा से शटबू लू
 जेबो में भरा
 आदमी का वनाया
 यूकू भ्रूण पर
 जिसे कहते रह हैं वे मेरा भविष्य
 सवाला के खारे तूबे खिलाऊंगा उह
 इसकीसवा सदी का पहला दिन ही
 जान ले यह
 उसको मर साथ जीना है •

घटाटोप

घटाटाप
 दादल-दर-दादल
 उतर-उतर आया है इदर
 डुबो डुबो देने
 सूख-सूख कर
 पवत सी ऊभी धरती को

नहीं मुना है नहीं सुनेगा
 मूसलधार अहम यह
 जिसन भेट
 माटी पर चलते पग

नहीं दियेगा
 परद पड़ी पुतलिया का
 लाठिया,
 अगुलिया पर
 तन तन हुए गणो का
 गोवरधन

फिर भोगे
अपन ही हाथा रची नियति—
छितर छितर कर वह
पूठ पसवाड
आछ नाला-नाली स •

यादें

यादें
गीता तो नहीं
पडित वन वाचो हमेशा
भारी बनाने
पुण्य का छाता

मूली पर चढ़े
मसीह जसी भी नहीं यादें
दगते ही मन दुखाओ
आखें भरो
अस्तित्व ही कर दा समर्पित

एलारा अजता भी नहीं हैं य
निरखा पहचानना चाहा
अपना अतीत

य पोथिया भले हा
इनकी भाषा
तरे आज की भाषा नहीं है

भरम है
छल भी है स्वयं से

६६ आज की जाख का सिलसिला

यादा ये सहारे
जिंदगी जीना •

आबनूसी रात के कोठे में

आबनूसी रात के कोठे में
फिर हलचल हुई है
बहुत मो
खूबसूरत यादें
जो मांड पर बतरा गई थी
धुंधल बन झुनाती
आगन में उतरी है

साथ है व व डीठ सपने
बजाने लग गए हैं
फूट टाल ताश
ऐसे शोर से
भागा किए हम दूर
पर फिर उतारू हो गए हैं
छा लेने
आख भर ही हमारी नींद

जानना चाहते नहीं है वे
उनके साथ जीना
उम्र भर भरमना है
और दिन के पाव चल कर
साक्ष के घर पहुंच जाना
धूनी तापना है

यह धूनी
फलमलाती आच से

तन का ही नहीं
मन को भी तावा बनाती है

सुबह भर क लिए सोये इरादो
निलज्ज यादा
मसखरे सपना से बहो—

हमार पट के तालाब की
मछलिया का
आटे की गालिया की ही प्रतीक्षा है
हमारा सलवटा पडा चेहरा
हाठा के किनारा
काई सी पडी जो प्यास
दख, खा सक खाए

हमदम इरादो
भरम की पुतलिया से
सधी आवाज मे कहा तो
बीमार यादा

गूग सपनो से
बोला नहीं करत है हम
घरती की खुशबू से
रचे है हमने बालत सपने
ऐसे सपना का

कुनवा का कुनवा
पवत-समुदर नापने का
हौसला लेकर चलन लगा है •

आज

छोटा बहुत छोटा

छाटा बहुत छाटा

निखने वाला आज

यकबयक फलवर

आ गया है मामन

गूँगे मा चला करता

फँकन लगा है आवाजा के भाँडे

अड गया है

उतारन लगा है

जिल्ला की भूमिमा पर स लेवडे

दाता से ताजवर देखता है

दिए जा रह आखर

कर दिया है लीर-लीर

पहनाया गया तटस्थ चोला

उपाड लिया है

थार शरीर

दाए-बाए थार ही थोर

दहवती आखें

तिरछा हा गया है

कगूरा परस्त मूरज

घहघहाया समुदर

अपन भीतर समोता नगी धरती

उफनता हुआ

चल रहा है आज

मैं भी

इस आज स ही लिया चाहता हूँ

अथ—अपने होने का

बुनती रहती है
कपाल की छत के नीचे
सशय भय
विवशताएँ ही विवशताएँ
सोच की
छोटी सी फिरकनी
इम आज से
ले लू हाथ
झटक कर तोड़ दू कच्चा सूत

बाहर निकाल
अपने भीतर की
कसमकस को
फेंक दू इस समुद्र में
फैला लू अपनी बाह
अपना एक-एक क्षण
हम आगोश
हम आहूँ हो लू
इस आज का
इसी को बोलता
चलने लगू मैं इसके साथ •

जब भी बैठता हूँ

जब भी बैठता हूँ
अपने समय से बतियान
दिखाने लगता हूँ
साथ रहने का हिसाब

उगल देता है वह
सवाल ही सवाल मेरे सामने
रखना चाहता हू
अपनी हथलिया म
पर छितर जाती है अगुलिया
फिमल जाता है मुझसे

अपने ही समय का
एक-एक सवाल
सोचता हू कैसे उठाऊ
वहा बिछाऊ
उठाते-उठाते थक जाता शरीर

लोग मिलत हैं
खिड़कियो से झाँकत
सड़क छोड़ चलते हुए
कतरा जाते हैं मुझसे
आसपास के बहुत कुछ से भी
टकराने पर भी

वे नहीं, तब बालता है
उलट जाती है मेरी जीभ
हाठा पर आया
अपना ही धूँध खाटता
घोलने लगता हू खुद से

गूँगी यात्रा में आए
ठहराव और सवालो से
बुझाता हुआ मैं
सोच ही नहीं पाता कि
लोग ही हामे मेरे जैसे
सवाल ही सवाल

उगानवाले
वर्षा-तपाकर दाग देना
घम ही हो उनका
न लगता हा उन्हें

ऐसा किए बिना
अपना हाना—

क्या पहनना चाहता है
नाबालिग समय
हर सुबह नई कमीज
क्या नहीं हुई है उसे
इशारा पर चलन की आदत
क्या नहीं खाता है
परोस दिया जाता है जा भी
ठहरा ही रह
रख दिया जाए जा सामन पहाड़
चाह ही क्या
बद किवाड़ा को पीटना-तोड़ना

यही विवश होते हैं शायद
सवाल धर्मी लोग
उमक चेहर पर आए
तनाव-तेवर का
कविता या कहानी भर कह देन
क्या नहीं समझता वह
कहानी हाती है परिया की
दादी नानी की
और कविता तो केवल सपना की
फूटर चहरा
फून पत्ता की

पढ़-मुन कर
माजली जाती है
बन्मजा हुई जीभें
और बाल जाती है तातई भाषा
वही है मत वही है सही
कस बदला जा सकता है इस
बहुत गहर से जुड़ा है
यह भी तो

बहुत कुछ का होना बनाए रखने
मह व्याख्या है उसकी
जो बोला गया है आकाश से
लिखा गया है

अज-ताआ लाटा पीठा म
इन पर चढ़ी धूल से
सर पोत लेन का अर्थ है
सान जैसी हमारी सम्यता
पत्थर रग ससृति
लगा दी गइ है

जगह-जगह
छूने छोटन-जाडन की
सहत मनाही की तस्विया
अमानत है सम्हाल रखनी है
जाने किस मदी का उठ आए पितर
जखरी हो हाना बनाए रखना
तराशे खुद का इस मुजब
हुआ रह परछाइ

कौन त त त तुम !
तो अवेला नही हू मैं
मेरे ही जैसे तुम
मेरे ही तरह पहुँचे हो न यहा
किसिम किसिम के
सवाला का वाझ ही है न पोटली म
छिली है हथेलिया
खरोची हागी दीवार पीटे हागे किवाड
फटी बिवाइया छापी है न
लो सामने हो लेता हू
जुडवा लगते हैं न हम
एक ही कारीगर से टाचे गए चहरे

क्या दखते हो मुझे
तरेडा गया है शरीर

जीवपणा नही
हथियार ही टूट हैं
आस्था नही
तो होलें हम साथ
एक यात्रा
एक और साथ के भावता
मगर मेरे हम रूप
वता यह क्या है
क्या है यह साथ स बुदबुदता
फफाल जा रहा है शरीर
सुन मेरे सहयात्री सुन

बिस्ती का होना
बनाए रखन की यह विवशता
गलत हकीकत है
घाप दी गई है हम पर

खालड अतीत यह गुबार
यह ठहराव ये सवाल
झटक दें अपने पर स अब
और मानूँ लें
तू मैं और वे भी
अपराधी है समय के
सवाल पर सवाल ही तो रखते रहे
पापत रहे
फुटपाधिया से बोलने के भरम
करत रहे गूगी यात्राए

अपने समय की
तस्वीर बनाने से पहल
जरूरी है हो जाना तलाश
तलाश मिट्टी की
रच सक्ते जिससे अक्षर
आत्मकद अक्षर
जिनके जुड़ने से बन

आदमी से आदमी का
आदमी के लिए निर्णायक सवाद •

सहज नहीं होता

सहज नहीं होता
मेरा मेरे चारों ओर का होना
होता है जो भी
आसपास या फिर भीतर-बाहर
अचानक का ही
हाना हाता है शायद

बहुत पहले का जड़—जड़
रख दिया गया है गोदरेजा में
क्षलक लेने सर झुकाने
और दुख-दुख कर
बनना है जिसका धम
बाध कर ठहराया गया है
होता रह
यू न होना बहुत कुछ का

सूरज के जन्म से
कुबड़ा जाने तक
तनाव चिपे चेहरा में
बारह घंटा के युग के लिए
सम्बोधन सजाए जड़ी दहा से
वीतराग होना
वालिस्त भर आकाश ओढ़
शुद्धी अगीठियों के सामने
अजनबी बने रहना भी

बेमानी हो गया है शायद
हो गई है भवाद
सड़को की भीड़
छोटे उछालने लगे है
घिमट घिसट कर पाव

सी दिया गया है
वक्त बवक्त चीखती चिमनिया का
रखा गया है केवल गुमसुम
धरती और आकाश के बीच

देह ही तो है
दुघटना है जिसके लिए
आज और कल का हाना
सूखी छाल है
मैं और तुम
हिलत खडखडाते हैं
पर देह वह भी है
सब कुछ भाग
नकारती धकी जा रही है
फाइले खोजती है जीने के लिए

बदमजा हा गए सब कुछ पर
थोप दिए जाने
मिल ही नहीं पा रही
एक भी सच्चा कोई सम्बाधन
कुछ भी ता नहीं बचा है
दह के अहसास भर के सिवा •

खुरदरी हथेलिया

खुरदरी हथेलिया

रगड़ा करता है

पेट की पिचकी पेंदी पर

सायरन से सायरन की

मशकत के बाद भी

मेरा देश

पुता होता है धुआ

उसके चेहरे पर

चिटखती नहीं एक भी हड्डी उसकी

जिया करता है

शरीर ढाता हुआ

दपतरा से दडबो तक

होती रहती है बलगम

उसकी ऊब और खीज

तनने से पहले ही

झटक कर झुला दिए जाते हैं हाथ

टीप दिया जाता है

ठगी अगुलिया से

आवाज होन से पहले ही

उमका आदेश

खास-खास कर

करवटें बदलता रहता है मेरा देश

गिनता है उम्र की सुबह शामे

चौपाया की पूजा के बाद

रोटी खोजने

भागता है मेरा देश

नहीं जानता वह

हर सातवें

या फिर महीन आखिरी दिन

दिया जाने वाला

टक्माली कागज
मेहनत की कीमत होता है या
मरत हुए जीने की
सूर तुलसी से मिली

विरामत के घरताल
बजाता रहता है मेरा देश
भजता रहता है
भूख का भुलावा देने वाला गांधी नान

कैसे जाने वह
खैराती अनाज की रोटिया
लहू नहीं बनाती

आखें ससार का
नान गुरु होने की पीनब म ऊबता
मेरा दश सोचे ही कैसे
मेहनत बदल ली जाती है दौलत में
और दौलत
आदमी के लिए नहीं
बाटी जाती है सिर्फ इजाफे के लिए

सुबह से शाम
भट्टी पत्थर से बतियाकर बना
चार रोटी पूजी का मालिक
कैसे बने

बनने ही कौन दे
मेहनत का हक्दार
नहीं जानता मेरा गो भक्त देश कि
साजिशा के समझीते हो रह है
लोह की दुनियाए
बनान वाली जमात के खिलाफ
बाचने लगे हैं

समाजवाद की पोथिया
पूजी के पगम्बर

शरीर ही न हो जिनका अपना

कैसे उठाए विद्रोह के हाथ
कैसे लगाए आवाज से आग
चलें कैसे बीच सड़क

हां, कैसे चले
वक्त के मसीहा ही
शब्दा का

जीने का नहीं बोलने का धम माने
ललकारें
नारा मे कठ सोड लेने और बाट
बचाव की लड़ाई के उपदेश

बीमार चेतनावाले
मेरे समय के पशवाओ
मत मोडा

खूनखारा से
आखिरी लड़ाई लड़ने पर आमादा
हीसला की बलदिया

फँकने दो उन्हें
ताड़पत्ता पर लिखी मुर्दा पोथिया
नोच लेन दो

जनता का राज चलानेवाले
चेहरों पर चढी नकाबें
लटका लेने दो खौराहो पर
पाच दस शीला की राजनीति
और देख लेने दो

वह दश
बिछाड़ गई है जहा
जमीन पर वारुद की एक और जमीन
ठंडे अस्पतालो मे नही
सुलगत आगन म जमता है आदमी
द्रुध नही
छील दी गई छातिया का
नरु पिलाती है मा अपन बेटे को

इस देश को भी
 पढ़ लेने दा वह भाषा
 मसालों से रोशन खदका में
 सिखाय जाते है सबक
 ताबूत-बंद हाकर भी
 की जाती है यात्राएँ
 मौन व ठिकान दहा कर
 दिए जाते है जवान हान के मुवूत

सीखने दा मेरे दश को भी
 आग की वरखा में चावल उगाना
 घाम के निवाला पर
 आदमखारा से लडना
 जिंदगी की लड़ाई •

धरती पर एक और धरती

धरती पर एक और धरती
 आकाश पर एक और आकाश
 राख का रंग
 नुचा हुआ चेहरा
 कितना धिनीना है
 और है एक भीड़

इन दोनों का
 और अपन बहुत कुछ को भी छोड़
 लाघती जाती है
 दूसरी धरती
 दूसरे आकाश के लिए
 भागती है धून के चक्का पर
 पाव धरती पर भूलती नहीं

मुर्दा सिपाही की जेब में बिस्कुट खोजना
वीन लेती है जली रोटिया के टुकड़े

घान नहीं घरती की हथेली पर
पानी नहीं आकाश के कटारे में
जले-बुझे कोयले
नीचे-ऊपर घुआ
सास लेन भर हवा
पहचान से पहले
हाना बनाए रखन
बहुत कुछ तलाशती अपने जैसे ही
दूमरे से अजनबी भीड़
दूसरे से इतनी दूर
घरती आकाश •

आखी का आगन

आखा का आगन
बन गया
झील जा खारे जल की
पियेगी कसे दृष्टि
दूर दूर दूरात
देहरी से ही
ठरता गया
मडक तक दद
दृष्टि कसे साधेगी

सनाटे न
कुहरा लिया अगर

सार ही घर का
दृष्टि रहेगी जब तक उदी

बौन सुनेगा
पत्ता भी सारंगी बजती
परभाती पान पर
हस्ताक्षर बौन करेगा
सूरज के हाथा
कौन पियगा दूध •

सामने पड़े

सामने पड़े
इस मीन का
आवाज हाना, कहवहे
फिर दुख दुखाकर
आधियाना

धूप का अखबार हाकर
शार करना
जाकाश से दो हाथ
दूरी पर टगी
खपचिया को खटखटाना
सास का फुटपाथ पर
असवाब होना
बिकने-बेचने के
सार सिलसिलो को
वने रहने पीना पहनना

साचने वाली तहा मे

खाली कुछ नहीं होता
भीतर और बाहर
अनहोना कुछ भी नहीं होता

सिलसिलो से बुना हुआ
परिवेश मेरा है
मैं इसका हूँ •

पाव-पाव चलने लगी हैं

पाव-पाव चलने लगी है
शहर की धरती
सरकने लगा है
गूँज-गूँज कर आकाश
नहा रही है
आदमियों के समुद्र में
फुटपाथ की बाहे खोने सड़क
खुश है वह
गहरे-गहरे छप रहे हैं
उसके मुँह बलेजे पर
जीने की भाग की
अधिकार की लड़ाई में
बदल देने पर आभासा इरादे

कतार और झंड़े होकर
चलते शहर को देख
उखड़ने लगी है
बामगारों की मेहनत खा खाकर
बदशक्ल हो गए
लोथड़ों की साँस

कुहासे की हृदो मे

कुहासे की हृदा मे
गरबते विस्तार का
एक भी छोर दिखता नही
भूख का ग्रह्याण्ड
ढोता हुआ कब तब चलू

क्षणा का उम्र बहता हुआ
शब्द बुझता रहा हू
मेरा ग्रह्याण्ड मुझसे लहू-मांस लेकर टूटा करे
खाइ हुई रोशनी के लिए
खाज बनता रह
मगर आज तब बाले गए सब अथ
खा गई खामाशियो की गिलहरी
हृदा से दना ग्रह्याण्ड
मुझमे ही ठरा जा रहा है ,

राशनी का ललकती आ जीवेयणा
इस जड शिलाखड का वाम
कैस सह , कब तक सह

तू जो चाहे
सामन के घुए की दरारु
दूर तक और पाव छाप्
किसी कोण पर सूय आकार दू
तू इंधन बनी इस तरह से मुलम
मैं मरे ग्रह्याण्ड के साथ विस्फूट लू •

अस्तित्व को विस्तारतो

अस्तित्व को विस्तारती
ओ घावनी
तुम जहर फेंको
फेंकनी जाओ कि
बावियो मे जमते
धीमार पीढी के गुणक
मरते चले जाए

शिराआ मे
दौडते रक्ताणुओ
अब तो
ऊर्जा हो लो
खाया गया है
जितना जसा शूय
तलछट सहित बाहर उबाका

आ, चेतना के स्फूर्तिगो
देह के ग्रहाण्ड को झकझोर दो
रघ्न फूटें
फूटत जाए
उजल जाए निस्सीम •

□□

